आकार IAS

Shaping Your Dreams

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था

मुख्य परीक्षा

इकाई-02

160/4, A B Road, Pipliya Rao, Near Vishnupuri I-Bus Stop, Indore (MP)

aakarias2014@gmail.com www.aakarias.com

9713300123, 6262856797, 6262856798

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था

ECONOMY OF MADHYA PRADESH

इकाई - 2

- प्रमुख फसलें, कृषि जोत क्षेत्र एवं फसल प्रतिरूप, फसलों के उत्पादन एवं वितरण का भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरणीय प्रभाव, बीज एवं खाद की गुणवत्ता एवं आपूर्ति से जुड़े मुद्दे, कृषि के तरीके, उद्यानिकी, मुर्गीपालन, डेरी, मछली एवं पशुपालन आदि के मुद्दे एवं समस्याएं, कृषि उत्पादन, परिवहन, भंडारण एवं विपणन से संबंधित समस्याएं एवं चुनौतियां।
- कृषि की कल्याणकारी योजनाएं।
- सेवा क्षेत्र का योगदान।
- मध्यप्रदेश का आधारभूत ढांचा एवं संसाधन।
- मध्यप्रदेश का जनांकिकी परिदृश्य और मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव।
- औद्योगिक क्षेत्र, संवृद्धि, प्रवृत्तियां एवं चुनौतियां।
- कुशल मानव-संसाधन की उपलब्धता, मानव संसाधन का नियोजन एवं उत्पादकता, रोजगार के विभिन्न चलन (ट्रेंड्स)।

Unit - 2

- Major crops, holding and cropping patterns, Social and physical environmental impact on producation and distribution of crops, Issues and challenges related with quality and supply of seeds and manure, farming practices, Issues and challenges of horticulture, poultry, dairy, fisheries and husbandry etc. Problems and challenges related to agricultural produce, transportation, storage and marketing.
- Welfare Schemes of Agricultural.
- Contribution of Service Sector.
- Infrastructure and resources of Madhya Pradesh.
- Demographic scenario of Madhya Pradesh and its impacts on the economy of Madhya Pradesh.
- Industrial sector, growth, trends and challenges.
- Availability of skilled human resource, employability and productivity of human resource, Different trends of employment.

परीक्षा योजना

सामान्य अध्ययन के द्वितीय प्रश्न पत्र के भाग–II की इकाई–II का **पूर्णांक 30** है।

इकाई	प्रश्न	संख्या	x	अंक	=	कुल अंक	आदर्श शब्द सीमा
इकाई–1	अति लघु उत्तरीय	03	x	03	=	09	10 शब्द/01 पंक्ति
	लघु उत्तरीय	02	x	05	=	10	50 शब्द/05 से 06 पंक्तियां
	दीर्घ उत्तरीय	01	x	11	=	11	200 शब्द

नोट – प्रश्नों की संख्या आवश्यकतानुसार कम या अधिक की जा सकेगी।

विषय सूची (CONTENTS)

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	मध्यप्रदेश अर्थव्यवस्था - एक परिचय	01 - 05
2.	राज्य की प्रमुख फसलें	06 - 13
3.	कृषि जोत क्षेत्र एवं फसल प्रतिरूप	14 - 17
4.	फसलों के उत्पादन और वितरण का भौतिक और सामाजिक पर्यावरणीय प्रभाव	18 - 21
5.	राज्य में बीज की गुणवत्ता एवं आपूर्ति से जुड़े मुद्दे	22 - 27
6.	कार्बनिक एवं अकार्बनिक खाद की गुणवत्ता एवं आपूर्ति से जुड़े मुद्दे	28 - 33
7.	कृषि के तरीके	34 - 36
8.	उद्यानिकी	37 - 40
9.	मुर्गीपालन	41 - 44
10.	डेयरी उद्योग	45 - 48
11.	पशुपालन	49 - 54
12.	मत्स्य पालन	55 - 58
13.	राज्य में कृषि उत्पादन, परिवहन, भंडारण एवं विपणन से संबधित समस्याएं एवं चुनौतियां	59 - 70
14.	कृषि की कल्याणकारी योजनाएं	71 - 79
15.	सेवा क्षेत्र का योगदान	80 - 84
16.	मध्यप्रदेश का आधारभूत ढांचा एवं संसाधन	85 - 98
17.	मध्यप्रदेश का जनांकिकीय परिदृश्य और मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव	99 - 107
18.	औद्योगिक क्षेत्र, संवृद्धि, प्रवृत्तियां एवं चुनौतियां	108 - 117
19.	कुशल मानव-संसाधन की उपलब्धता, मानव संसाधन की नियोजन एवं उत्पादकर्ता, रोजगार के विभिन्न चलन (ट्रेंड्स)	118 - 123

मध्यप्रदेश अर्थव्यवस्था - एक परिचय

- ❐ प्रस्तावना
- ❐ मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की विशेषताएं
- ❐ मध्यप्रदेश की सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की भागीदारी
  - ❖ प्रचलित मूल्यों पर (मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21)
  - ❖ स्थिर मूल्यों पर (मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21)
- ❐ मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति शुद्ध आय
- ❐ मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास हेतु सुझाव
  - ❖ राज्य निर्माण की संभावनाओं का विकास
  - ❖ पूंजी निर्माण में वृद्धि
  - ❖ कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र पर संतुलित विकास रणनीति
  - ❖ आधुनिक तकनीकों एवं नवाचार पर बल दिया जाना
  - ❖ धन व आय के समान वितरण पर जोर

मध्यप्रदेश अर्थव्यवस्था - एक परिचय
Madhya Pradesh Economy - An Introduction

❐ प्रस्तावना (Introduction)

अर्थव्यवस्था की समग्र आर्थिक क्रियाओं का सैद्धांतिक तथा व्यवहारिक अध्ययन ही अर्थशास्त्र है, अर्थात् अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र का व्यवहारिक रूप है। किसी राष्ट्र द्वारा लोककल्याण के उद्देश्य से उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुए अर्थ को केंद्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था ही अर्थव्यवस्था कहलाती है।

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था भारतीय अर्थव्यवस्था की भांति मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रकार है, जिसमें राज्य एवं निजी क्षेत्र मिलकर आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते हैं तथा उद्देश्य समाज कल्याण के साथ-साथ लाभ को अधिकतम करना होता है। मध्यप्रदेश एक अल्पविकसित एवं बीमारू कहा जाने वाला राज्य है, जो धीरे-धीरे विकासशील राज्य की श्रेणी में शामिल होता जा रहा है। जहां कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों की प्रधानता है तो दूसरी ओर औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्र की संभावनाएं मौजूद है।

❐ मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की विशेषताएं (Features of Economy of Madhya Pradesh)

भारत के कुल क्षेत्रफल में मध्यप्रदेश की कुल 9 प्रतिशत भागीदारी है। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है, क्योंकि राज्य की कुल जनसंख्या का 72.37 प्रतिशत भाग ग्रामीण जनसंख्या है, जो कृषि एवं अन्य कृषि संबंधित कार्यों में संलग्न है।

- भारत के समान ही मध्यप्रदेश कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला राज्य है।
- मध्यप्रदेश में निम्न प्रति व्यक्ति आय है।
- सकल घरेलू उत्पाद में द्वितीयक एवं सेवा क्षेत्र में अपर्याप्त वृद्धि हुई है।
- मध्यप्रदेश के लोगों में निम्न जीवन स्तर एवं अपर्याप्त सुविधाएं।
- राज्य के मुख्य खनिजों में तांबा, अयस्क, मैग्नीज अयस्क, चूना पत्थर, कोयला और लौह प्रमुख है।
- मध्यप्रदेश में जनसंख्या का दबाव गत वर्षों से बढ़ रहा है, जिससे ऋणग्रस्तता, गरीबी एवं बेरोजगारी की दर में वृद्धि हुई है।
- मंद औद्योगिक विकास, निम्न पूंजी निर्माण, अंतर क्षेत्रीय असंतुलन, तकनीकी पिछड़ापन आदि।

प्रदेश के सकल राज्य मूल्यवर्धन में आधार वर्ष 2011-12 की तुलना में प्राथमिक क्षेत्र का अंश वर्ष 2011-12 में 33.85 प्रतिशत था, जो वर्ष 2018-19 में बढ़कर 37.8 प्रतिशत स्थिर (2011-12) भावों पर रहा। वर्ष 2018-19 के दौरान प्राथमिक क्षेत्र में 5.48 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। प्राथमिक क्षेत्र का जीवीए में द्वितीयक क्षेत्र से अधिक योगदान पिछड़ी अर्थव्यवस्था के परिचायक के रूप में देखा जाता है।

सकल राज्य मूल्यवर्धन में आधार वर्ष 2011-12 की तुलना में द्वितीयक क्षेत्र के अंश में गिरावट दर्ज की गई है। द्वितीयक क्षेत्र का अंश 2011-12 में 27.09 प्रतिशत था, जो वर्ष 2018-19 में घटकर 24.4 प्रतिशत स्थिर (2011-12) भावों पर ही हो। तृतीयक क्षेत्र का अंश वर्ष 2011-12 में 39.6 प्रतिशत था जो 2018-19 में 38.79 प्रतिशत स्थिर भावों पर रहा। उपरोक्त विश्लेषण जीवीए में उद्योग एवं सेवा क्षेत्र का कम योगदान दर्शाता है, जो अर्थव्यवस्था के पिछड़ेपन का परिचायक है।

❑ मध्यप्रदेश की सकल घरेलू उत्पाद में विभिन्न क्षेत्रों की भागीदारी
(Participation of Various Sectors in the GDP of Madhya Pradesh)

❖ प्रचलित मूल्यों पर (मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21)

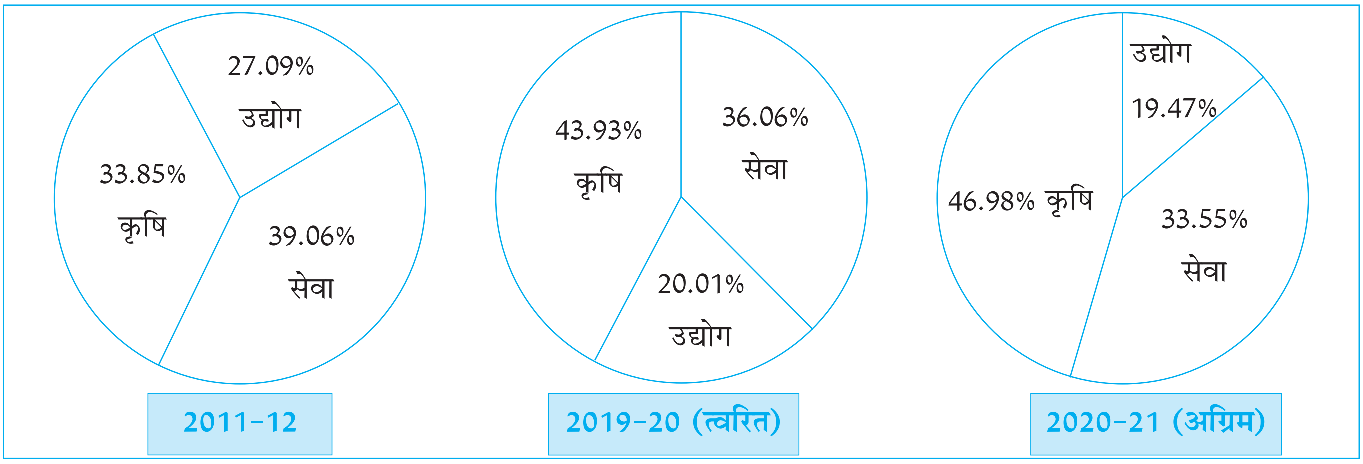

❖ स्थिर मूल्यों पर (मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21)

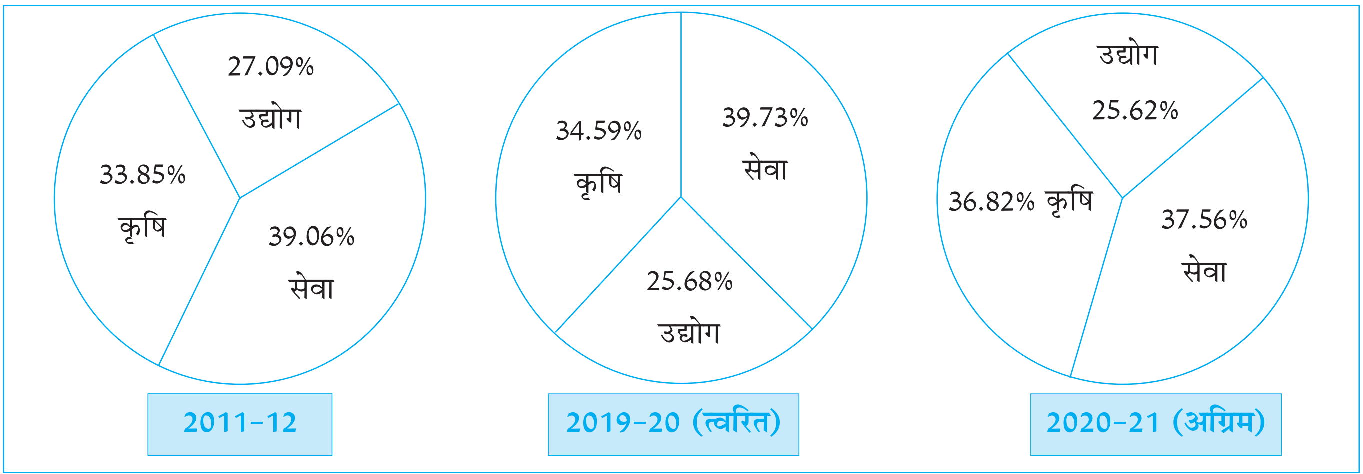

वर्ष 2020-21 के अग्रिम अनुमानों के अनुसार राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2019-20 (त्वरित) की तुलना में प्रचलित भावों पर 2.12 प्रतिशत तथा स्थिर भावों पर 3.37 प्रतिशत की कमी रही है। वर्ष 2020-21 (अग्रिम) दौरान विगत वर्ष से प्राथमिक क्षेत्र में 2.57 प्रतिशत की वृद्धि आंकलित की गई है। इसी प्रकार द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र में क्रमश: 3.90 प्रतिशत की एवं 8.94 प्रतिशत की कमी अनुमानित रही है।

❑ मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति शुद्ध आय (Per Capita Net Income of Madhya Pradesh)

स्थिर भावों (वर्ष 2011-12) के आधार पर प्रति व्यक्ति शुद्ध आय वर्ष 2019-20 (त्वरित) में 62236 रुपए थी जो घटकर वर्ष 2020-21 (अग्रिम) में रुपए 58425 हो गई है। जो गत वर्ष की तुलना में 6.12 प्रतिशत की कमी दर्शाती है। प्रचलित भावों के आधार पर राज्य की शुद्ध प्रति व्यक्ति आय (वर्ष 2019-20) में 103288 रुपए से घटकर वर्ष 2020-21 (अग्रिम) में 98418 हो गई, जो 4.71 प्रतिशत की कमी दर्शाती है।

प्रति व्यक्ति शुद्ध आय प्रचलित एवं स्थिर (2011-12) भावों पर

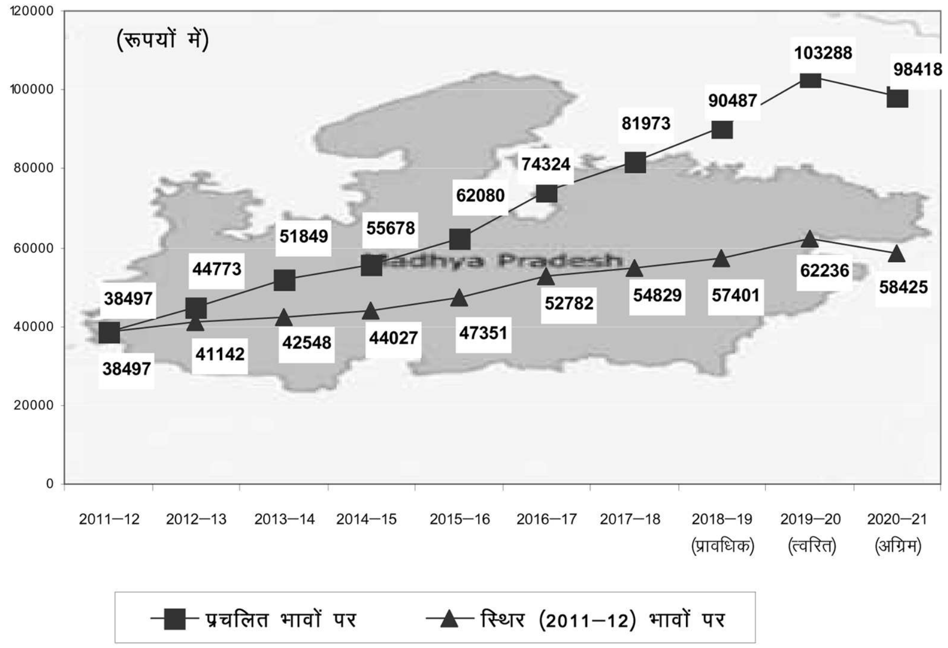

अधिक जनसंख्या संसाधनों एवं सरकार पर अधिक भार डालती है, जिसमें आर्थिक विकास दर पर नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है। मध्यप्रदेश में गरीबी रेखा से नीचे जीवन की जनसंख्या का अनुपात 31.65 प्रतिशत है जो राष्ट्रीय स्तर 21.92 प्रतिशत से काफी अधिक है। राज्य में आर्थिक विकास की गति बढ़ाने के साथ-साथ क्षेत्रीय असंतुलन भी नजर आने लगा है। राज्य द्वारा केवल कुछ ही जिलों – इंदौर, धार, भोपाल, देवास, उज्जैन, जबलपुर आदि में निवेश किया जाता है, जबकि अन्य जिले में अपेक्षाकृत कम है।

नीति आयोग की रिपोर्ट नवंबर 2021 के अनुसार मल्टी-डाइमेंशनल पॉवर्टी इंडेक्स जारी किया गया। इसके मुताबिक गरीबी के मामले में मध्यप्रदेश (36.65 प्रतिशत गरीबी) चौथा राज्य है, जिसमें अलीराजपुर भारत का सबसे गरीब जिला बताया गया है।

- मध्यप्रदेश एक खनिज बाहुल्य राज्य है, जिसका मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था में प्रमुख योगदान है –
  - हीरा एवं मैगनीज के उत्पादन में मध्यप्रदेश का प्रथम,
  - चूना पत्थर एवं रॉक फास्फेट के उत्पादन में द्वितीय
  - कोयला के उत्पादन में चौथा स्थान है।
- प्रदेश में वर्तमान शिशु मृत्यु दर 47 प्रति हजार जन्में बच्चों पर एवं लाख प्रसव पर मातृ मृत्यु दर 173 है।
- उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रदेश की मानव विकास की स्थिति देश में निचले पायदान पर है।
- मध्यप्रदेश एक स्थल अवरूद्ध राज्य है, जिसमें समुद्री अर्थव्यवस्था का लाभ नहीं मिल पाता है।
- मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की इन विशेषताओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश एक अल्पविकसित राज्य है। अल्पविकास एवं पिछड़ेपन में आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कारणों का सम्मिलित दुष्प्रभाव पड़ा है।

❐ मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास हेतु सुझाव
(Suggestions for Economic Development of Madhya Pradesh)

❖ राज्य निर्माण की संभावनाओं का विकास (Development of Possibilities of State Formation)

- मध्यप्रदेश में आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि यहां राज्य निर्माण की संभावनाओं का विकास किया जाए अर्थात् लोगों में आर्थिक विकास के लिए चेतना जाग्रत की जाए।
- यह तभी सम्भव है जब समाज शिक्षित हो, क्योंकि उचित शिक्षा के द्वारा लोगों को इस बात की जानकारी होती है, कि विकास

का कार्य कितना आवश्यक, वांछनीय और सम्भव है।

- वे इसके लिए इच्छुक व प्रयत्नशील होंगे।
- सरकारी, गैर-सरकारी प्रयासों से वैज्ञानिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में सुधार करके विकास हेतु अनुकूल पृष्ठभूमि बनाई जा सकती है।

❖ पूंजी निर्माण में वृद्धि (Increase in Capital Formation)

- मध्यप्रदेश के आर्थिक विकास के लिए पूंजी निर्माण की दर में वृद्धि को महत्व देना आवश्यक है तभी बड़े पैमाने की उत्पादन प्रणाली और विशिष्टीकरण को अपनाया जा सकेगा।
- पूंजी निर्माण में वृद्धि के लिए सरकार घरेलू बचतों को बढ़ाने तथा उनके संग्रह की उचित व्यवस्था करे।
- इसके अतिरिक्त विदेशी सहायता के द्वारा भी पूंजी निर्माण को बढ़ाया जा सकता है।

❖ कृषि, उद्योग एवं सेवा क्षेत्र पर संतुलित विकास रणनीति (Balanced Development Strategy on Agriculture, Industry and Services Sector)

- मध्यप्रदेश में आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है कि कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्र तीनों पर ही पर्याप्त बल दिया जाए।
- मध्यप्रदेश की अधिकांश जनसंख्या कृषि में लगी हुई है तथा राज्य की आय का कृषि ही सबसे मुख्य स्रोत है। अतः प्रारम्भ में कृषि विकास पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान देना होगा तभी गरीबी तथा बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है।
- कृषि के विकास के लिए कृषकों को पर्याप्त मात्रा में कृषि साख व आदानों की उपलब्धता, कृषि विपणन की उचित व्यवस्था, भूमि सुधार इत्यादि बातों पर विशेष ध्यान देना होगा। ध्यान रहे, कृषि पर अधिक ध्यान देने से आशय औद्योगिक विकास की उपेक्षा करना नहीं है।
- औद्योगिक विकास के बिना यहां आर्थिक विकास भी पूर्ण रूप से सम्भव नहीं है।
- इस दिशा में सर्वप्रथम उन उद्योगों को बढ़ावा देना होगा जो कि कृषि से संबंध रखते हैं तथा जिनसे आयात प्रतिस्थापन तथा निर्यात संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान मिल सकता है।

❖ आधुनिक तकनीकों एवं नवाचार पर बल दिया जाना (Emphasis on Modern Techniques and Innovation)

- आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है, कि परम्परागत उत्पादन तकनीकी के स्थान पर आधुनिक उत्पादन तकनीकी को अपनाया जाए, परंतु यह उत्पादन तकनीकी प्रदेश की परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए, तभी उत्पादन तथा रोजगार में वृद्धि संभव होगी।
- इसके लिए बड़े पैमाने पर अनुसंधान कार्य व तकनीकी शिक्षा व प्रशिक्षण की सुविधाओं का विस्तार करना अति आवश्यक है।

❖ आय के समान वितरण पर बल (Emphasis on Equitable Distribution of Income)

- मध्यप्रदेश में आर्थिक पिछड़ेपन का एक प्रमुख कारण धन व आय के वितरण में भारी असमानताओं का पाया जाना है। अतः असमानताओं को दूर या कम करना बहुत आवश्यक है।
- असमानताओं को कम करने की दिशा में विभिन्न उपायों को प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित किया जाए, जैसे – अमीरों पर प्रगतिशील दर से कर लगाए जाए, निर्धन वर्ग पर ऐसे सार्वजनिक व्यय किए जाए, जिनसे उत्पादकता तथा उत्पादन बढ़े, साधन बाजार की अपूर्णताओं को दूर किया जाए, साधनों की न्यूनतम तथा अधिकतम कीमत निर्धारित की जाए।

राज्य की प्रमुख फसलें

- परिचय
- मध्य प्रदेश में कृषि प्रदेश
  - पश्चिम में काली मिट्टी का मालवा प्रदेश
  - उत्तर में ज्वार-गेहूं का प्रदेश
  - मध्य गेहूं का प्रदेश
  - चावल-गेहूं का प्रदेश
  - सम्पूर्ण पूर्वी मध्य प्रदेश चावल का प्रदेश
- मध्य प्रदेश की प्रमुख फसलें
- प्रमुख फसलों का उत्पादन
  - गेहूं
  - तिलहन
  - सोयाबीन
  - मूंगफली
  - चावल
  - चना
  - ज्वार
  - अरहर/तुअर
  - गन्ना
  - कपास
  - मेस्टा
  - अफीम
  - गांजा
  - तम्बाकू
- हरित क्रांति
- मध्य प्रदेश में हरित क्रांति का प्रभाव